# कवि राजेश जोशी कि कविता

**डॉ. ओमप्रकाश बन्सीलाल झंवर**
स्वा. सावरकर महाविद्यालय, बीड

'समकालीन शब्द अंग्रेजी के Contemporary का हिन्दी पर्याय तथा समसामयिक का अर्थबोधक है। इसलिए यह स्वत: ही स्पष्ट हो जाता है कि समकालीन कविता समसामयिक संदर्भो से सम्बद्ध है।'१ इसे युग विशेष के अनुरूप बदलती हुई चेतना या मानसिकता का द्योतक माना जाता है। यह कविता वर्तमान के यथार्थ का सीधा खुलासा करती हुई जीवन और उसके भीतर रह रहे मनुष्य की नियति और चुनौतियों को बड़ी गम्भीरता का साथ बयान करती है। इसलिए इस कविता में वर्तमान जीवन से जुड़े सभी बड़े मुद्दों, भूमण्डलीकरण, भ्रष्टाचार, पर्यावरण असन्तुलन, उपभोक्तावादी संस्कृति, क्षेत्रीयता, साम्प्रदायिकता, पेयजल संकट, भुखमरी, आतंकवाद आदि को काव्य का विषय बनाया गया है।

इस काव्यधारा के प्रमुख कवि हैं राजेश जोशी। जिन्होंने कविता, कहानी, नाटक आदि विधाओं पर अपनी लेखनी चलायी है। पर सर्वाधिक प्रसिद्ध वह समकालीन कवि के रूप में हैं। यहाँ उनके 'चाँद की वर्तनी' काव्य संग्रह जो २००६ में प्रकाशित हुआ को आधार बनाकर उनकी रचनाधर्मिता पर प्रकाश डाला गया है। 'कविता या किसी भी रूप में सामने आने वाली रचनात्मक अभिव्यक्ति अपने समय और समाज के प्रति व्यक्त की गयी एक खास तरह की प्रतिक्रिया होती है। इस प्रतिक्रिया में समय-समाज का और उसके बीच रचनाकार के आत्म का, जो बोध व्यक्त होता है उसे ही हम रचना की संवेदना कहते है।'[२] समकालीन कविता ने महसूस किया कि आने वाले समय में सबसे बड़ा खलनायक बाजार होगा इसलिए यह कविता बाजार द्वारा उत्पन्न खतरों के प्रति आगाह करती है। नगरीय एवं महानगरीय जीवन की चकाचौंध भरी जिन्दगी का बाहरी आवरण भले ही बड़ा सुखद एवं आनंदमयी प्रतीत होता है लेकिन उसके दूरगामी परिणाम अत्यन्त घातक एवं विनिष्टकारी हैं इसलिए यह कविता प्रगति एवं विकास की इस मशीनी अवधारणा को संदेह की दृष्टि से देखती हुई उपभोक्तावादी संस्कृति के खतरों के प्रति चेताने का कार्य करती है। राजेश जोशी का मानना है कि वर्तमान काल केवल सूचनाओं का काल है जो टेलिविजन और कम्प्यूटर सभ्यता की उपज हैं -

**'यह सिर्फ सूचनाओं का समय है**
**सूचनाओं में तब्दील हो रहा है ज्ञान**
**यहाँ तक की सच भी अब सिर्फ एक सूचना है।'**[३]

समकालीन कविता व्यक्ति में बढ़ती जा रही अकेलेपन और असुरक्षा की भावना को भी काव्य का विषय बनाती है। बढ़ते औद्योगिकरण एवं भूमण्डलीकरण ने आज जिस शहरी और मल्टीनेशनल की चकाचौंध भरी जिन्दगी को जन्म दिया है। उसने मनुष्य के जीवन में संदेह ही संदेह पैदा कर दिया है। उसे स्वयं नहीं मालूम की उसे क्या करना है और उसको जीवन का उद्देश्य क्या है -

**'एक दिन हम अपने घर का नम्बर भूल जायेंगे**
**और अपना घर नहीं ढूंढ पायेंगे**
**और तभी दूर से सीटी मारता एक पुलिस वाला**
**आकर पूछेगा क्यों बैठे हो यहाँ**
**हम कहेंगे हम अपना घर नहीं ढूँढ़ पा रहे हैं**
**वह हमारी बात पर यकीन नहीं करेगा**
**वह थाने ले जाने के बारे में धमाकायेगा**
**और कहते कहते अचानक फफक कर रो पड़ेगा**
**कहेगा मैं भी कई रातों से अपना घर ढूंढ रहा हूँ।'**[४]

साम्प्रदायिकता की समस्या समाज में काफी समय से व्याप्त है और दिनों-दिनों यह समस्या और भी विकराल रूप लेती जा रही है. जिसे देखकर यह लगता है कि आज भी हम आदिम युग में जी रहें है और मनुष्य में संवेदना नाम की कोई भावना नहीं बची है, गोधरा काण्ड आदि विभिन्न साम्प्रदायिक एवं आतंकवादी घटनाएँ इसके उदाहरण हैं जोशी उन दीवारों पर चोट करते है जो बीच में खड़ी होकर मनुष्यता को सम्प्रदाय, नस्ल तथा जाति में बाँट देती हैं -

**'पन्द्रह सोलह बरस की उस लड़की के कपड़े**
**जगह-जगह से फटे हुए थे**
**तभी दंगाइयों का एक गिराह आया**
**और उनमें से एक जोर से चिल्लाया**
**ए लड़की तू हिन्दू है या मुसलमान**
**तब आपस में जैसे एक दूसरे को सूचना देते**
**दंगाइयों ने कहा**
**पागल है साली एकदम पागल।'**[५]

राजेश जोशी की एक लोकप्रिय कविता है 'किस्सा उस तालाब का' जिसमें कवि ने जल की समस्या को उठाया है कि पेयजल की समस्या के कारण वर्तमान में पानी भी मूल्य चुकाकर पीना पड़ता है जिस कारण दैनिक कार्यो में उसका प्रयोग करते हुए मानव सौ बार सोचता है-

**"वह फकत पानी नहीं था**
**कि जिसे पी पीकर किसी को कोस लेता**
**उससे मुँह धोना सम्भव न था न कुल्ला करना**
**वह खरीदा हुआ था और मँहगा भी**
**उसका हर घूंट हलक से उतरते हुए**
**एक सिक्के की तरह बजता था।"**[६]

राजेश जोशी का काव्य शिल्प निराला है। जिसमें नाटकीय ढंग से संवाद करने की क्षमता है। वह शब्दों के माध्यम से उत्तेजना के बदले आहिस्ता-आहिस्त मर्म को उद्घाटित करते हैं। जोशी अपने काव्य में ज्यादा तर बोलचाल की शब्दावली का प्रयोग करते हैं कही-कही कथा कहने की प्रवृत्ति भी दिखाई देती है। इसीलिए इनकी भाषा में चोट करने की करारी क्षमता है वह किस प्रकार थोड़े शब्दों में कलात्मक ढंग से पूरी व्यवस्था को कटघरे में खड़ा कर देते हैं। उदाहरण प्रस्तुत है-

**'हम सोना चाहते थे**
**सो पाते ता सपने भी देखते**
**पर इस कमबख्त निजाम में**
**चैन की नींद कहाँ है।'**[७]

निष्कर्षतः कहा जा सकता है - 'कि समकालीनता में वर्तमान बोध के साथ ही अतीत और भविष्य का विवेक सम्मत बोध होता है। यह वर्तमान बोध ही समकालीनता को यथार्थ से जोड़ता है' अतीत-बोध और भविष्य बोध को अपने वर्तमान में समेटकर समग्र युग-बोध को प्रस्तुत करना ही समकालीनता का उद्देश्य होता है।'[८] वास्तव में समकालीनता का अर्थ होता है अपने समय केक प्रति ईमानदार होना। बिना समकालीन बोध के साहित्य अपनी अर्थवत्ता को सिद्ध नहीं कर सकता है। इस दृष्टि से जिस भी रचनाकार ने अपने साहित्य में युग धर्म को जिया है समकालीनता के दायरे में आते हैं। राजेश जोशी इसी परम्परा के प्रमुख कवि हैं। विशम्भर 'मानव' एवं रामकिशोर शर्मा के अनुसार - 'आज की आशंका भरी दुनियाँ में जहाँ आम आदमी का संघर्ष बहुत प्रखर है। वहाँ राजेश जोशी सपनों की दुनियाँ निर्मित करने की कोशिश करते हैं। वे पूँजीवादी व्यवस्था में शोषित, पीड़ित आमजन को अपनी कविता के माध्यम से जागरूक करने की कोशिश करते हैं।'[९]

जोशी जी का मानना है कि औद्योगिकीकरण एवं उपभोक्तावादी संस्कृति का प्रभाव सम्पूर्ण मानवीयता पर पड़ा है। धर्म की अमानवीय व्याख्या, स्वार्थपरकता, अर्थलोलुपता, विज्ञान के द्वारा विकसित विनाश के विभिन्न साधन आदि के कारण मनुष्यता के लिए संकट पैदा हो गया है। विकास की गति इतनी तीव्र है कि कारण मनुष्यता के लिए संकट पैदा हो गया है। विकास की गति इतनी तीव्र है कि मनुष्य को मनुष्य बनाने वाले गुण ही उसके भीतर से लुप्त होते जा रहे है। पर्यावरण असंतुलन एवं प्रकृति के दोहन के कारण मनुष्य के समक्ष देहरा संकट पैदा हो गया है। ऐसे संकटपूर्ण समय में कवि भी व्यथित है। उसके समक्ष समाज में व्याप्त विविध विसंगतियाँ, विद्रूपताएँ एवं चुनौतियाँ हैं। कवि राजेश जोशी की कविताएँ इन सभी चुनौतियों को स्वीकार करते हुए अतीत की कमजोरियों को वर्तमान से जोड़कर भविष्य के प्रति आगाह करती हैं।

**सन्दर्भ सूची**

१. मिश्र एवं पाण्डेय, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ.सं. २०२.
२. डॉ. विजय बाला तिवारी, छायावादोत्तर काव्य, पृ.सृं ७६
३. राजेश जोशी चाँद की वर्तनी, पृ.सं. ३०
४. वही, पृ.सं. २०
५. वही, पृ.सं. ६८-६९
६. वही, पृ.सं. २६
७. वही, पृ.सं. १०२
८. समकालीन हिन्दी कविता का इतिहास, पृ.सं. ३
९. विशम्भर सहाय 'मानव' एवं रामकिशोर शर्मा, आधुनिक कवि, पृ.सं. ३३७.